



Eklavya University

Bachelor of Art

(Jain and Prakrit Studies)

Session 2022-23 (से लागू)

NEP 2020

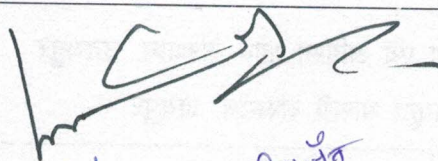
II Year

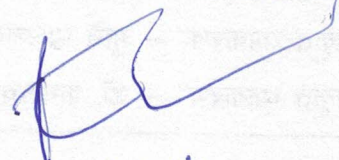
अधीनस्थ

Ashish

Nidw

पाठ्यक्रम			
भाग अ - परिचय			
कार्यक्रम : डिप्लोमा	कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष	वर्ष : द्वितीय	सत्र : 2022-23
विषय : जैन और प्राकृत अध्ययन			
1.	पाठ्यक्रम का कोड	EVA2-JAPR1T	
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	जैनदर्शन एवं प्राकृत व्याकरण (प्रश्न पत्र - 1)	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल /)	मेजर-1	
4.	पूर्वापेक्षा (Prerequisite) (यदि कोई हों)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए छात्र ने विषय.. जैन और प्राकृत का अध्ययन कक्षा/बी.ए. प्रथम वर्ष/प्रमाण पत्र/उत्तीर्ण किया हो।..... इस पाठ्यक्रम को निम्नलिखित विषयों के छात्रों द्वारा एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना जा सकता है :- सभी के लिए उपलब्ध (Open For all)	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	<ol style="list-style-type: none"> 1. छात्रों के चारित्रिक विकास में अत्यन्त उपयोगी। 2. सार्वभौमिक दृष्टि से आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक। 3. भारतीय दार्शनिक चिन्तन की वैज्ञानिकता का अवबोध। 4. भारतीय संस्कृति एवं कलाओं से परिचित कराना। 5. छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास के साथ भाषा अवबोध हेतु महत्वपूर्ण। 6. छात्रों को काव्य विधा एवं लेखन कला में दक्ष बनाना। 7. प्राकृत में वाक्य निर्माण और प्रयोग का ज्ञान कराना। 8. प्राकृत में अनुवाद एवं संभाषण कौशल का विकास। 	
6.	क्रेडिट मान	06	
7.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 30 + 70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 33
भाग ब - पाठ्यक्रम की विषयवस्तु			
व्याख्यान की कुल संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P:- 03			
इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या	
I	(अ) आस्तिक दर्शन : (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा)। (ब) नास्तिक दर्शन : (चार्वाक, जैन एवं बौद्ध) - उक्त दर्शनों का सामान्य परिचय अपेक्षित है।	15	


Ashish आशिश


Nodw

①

II	(अ) अस्तिकाय का स्वरूप और पांच अस्तिकाय। (ब) द्रव्य का स्वरूप और षड्द्रव्य। (स) सात तत्त्वों और नव पदार्थों का सामान्य परिचय।	15
III	(अ) ज्ञान का लक्षण, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान। (ब) प्रमाण का लक्षण, प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण।	15
IV	(अ) तद्धित प्रकरण : (सामान्य प्रत्यय, भावार्थक प्रत्यय, परिणामार्थक प्रत्यय, श्रेष्ठार्थक प्रत्यय) नियम तथा उदाहरण अपेक्षित हैं। (ब) प्राकृत निबन्ध : प्राकृत भाषा में निबन्ध लेखन/पत्र लेखन/वार्ता लेखन/संभाषण /लघुकथा लेखन।	15
V	(अ) समास : (सिद्धहेमशब्दानुशासन) विग्रह एवं समास का ज्ञान तथा समास के भेदों का अवबोध अपेक्षित है। (ब) लिंगानुशासन – लिंग विचार, स्त्री प्रत्यय और उनके प्रयोग।	30

सार बिंदु (की वर्ड)/टैग : आस्तिक, नास्तिक, दर्शन, तद्धित, निबन्ध, संभाषण, समास।

भाग स – अनुशासित अध्ययन संसाधन

अनुशासित सहायक पुस्तकें/ग्रंथ/अन्य पाठ्य संसाधन/पाठ्य सामग्री : –

1. "भारतीय दर्शन" – आचार्य बलदेव उपाध्याय – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. "भारतीय दर्शन" – डॉ. उमेश मिश्र – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. "जैनदर्शन" – आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री।
4. "जैन दर्शन" – पं. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, गणेश प्रसाद वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी
5. "जैन धर्म" – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री।
6. "जैन धर्म और दर्शन" – मुनि प्रमाण सागर जी महाराज।
7. "जैन धर्म दर्शन" – डॉ. मोहनलाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
8. "प्राकृत व्याकरण" – आचार्य हेमचन्द्र, के. वी. आपटे, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 1995
9. "प्राकृत बोध" – आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, प्रकाशन – जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर, 2009।
10. "प्राकृत रचना भास्कर" – मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज : प्रकाशन आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति उज्जैन (म.प्र.)
11. "प्राकृत व्याकरण" – मुनि प्यारचंद, आगम समता एवं अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर
12. "प्राकृत व्याकरण" – डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर

Nelli

आश्रीव जैव

2

13. "प्राकृत रचनोदय" – डॉ. उदयचन्द्र जैन, उदयपुर
 14. "प्राकृत विद्या प्रवेशिका" – आचार्य प्रज्ञसागर जी, प्रकाशन : भारतीय ज्ञानपीठ, सं. 2015
 15. "प्राकृत स्वयं-शिक्षक" – डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर
 16. "प्राकृत वाक्य रचना बोध" – युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं।
 17. पाश्चात्य दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, मनोहर प्रकाशन जतनबर, वाराणसी
 18. जैन-धर्म-दर्शन के विविध आयाम – डॉ. वशिष्ठ नारायण सिन्हा, प्रकाशन – प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, बिहार, संस्करण – 2016
 19. प्राकृत-संस्कृत के समानांतर अध्ययन – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव, प्रकाशन – भाषा-साहित्य-संस्थान, त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद, संस्करण – 1984
- अनुशंसित डिजिटल प्लेटफार्म – वेब लिंक, ई-सोर्सस, ई-पुस्तकालय, जैन ई लायब्रेरी, विकीपीडिया, ज्ञानगंगा।

भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधियाँ :

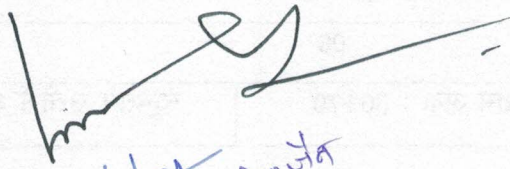
अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ : लिखित परीक्षा, सतत आंतरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्व्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न निर्माण।


अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30 विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 70

आंतरिक मूल्यांकन : सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) :	क्लास टेस्ट असाइमेंट/प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन)	कुल अंक : 30
आकलन : विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) : समय- 03 : 00 घंटे	अनुभाग (अ) : वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	कुल अंक : 70

कोई टिप्पणी/सुझाव :


Ashish
आचार्य जैन


Ashish

(3)

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या – ट्यूटोरियल – प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P:-03

इकाई.	विषय	
I	(अ) भारतीय काव्यशास्त्र एवं प्राकृत महाकाव्य। (ब) प्रमुख महाकाव्यों का परिचय – सेतुबन्ध, गउडवहो, लीलावईकहा, द्वयाश्रयकाव्य।	15
II	(अ) गउडवहो – विन्ध्यवासिनी स्तुति मात्र (पाठयांश की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न) (ब) लीलावईकहा – गाथा 1 –50 तक (पाठयांश की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)	15
III	नाट्यशास्त्र सत्रहवें अध्याय से नाट्योत्पत्ति एवं नाट्य प्रयोजन से संबंधित पाठयांशों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न।	15
IV	प्राकृत नाटक : प्राकृत के प्रतिनिधि नाटककार एवं उनकी कृतियों का सामान्य परिचय। (भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, श्रीहर्ष, भवभूति)	15
V	मृच्छकटिकम् : द्वितीय अंक मात्र (प्राकृत पाठयांशों की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)।	30

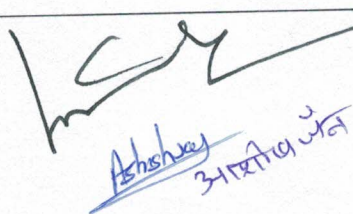
सार बिन्दु (की वर्ड) / टैग : शास्त्र, नाट्य, काव्य, महाकाव्य, नाटक, प्रतिनिधि।

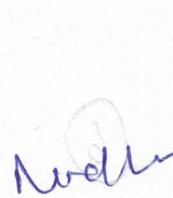
भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें/ग्रंथ/अन्य पाठ्य संसाधन/पाठ्य सामग्री :

संदर्भ ग्रंथ :

1. नाट्यशास्त्रम् – (भरतमुनि प्रणीत) बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदासकृत, कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. संस्कृत नाटक – ए. बी. कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
4. नाट्यशास्त्र का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1969
6. प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
7. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
8. प्राकृत प्रवेशिका : लेखक श्री आल्फ्रेड सी. वूल्लर, अनुवाद – बनारसीदास जैन, प्रकाशन : पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर।


Ashish
आशीष


Naveen

9. प्राकृत विमर्श – सरयू प्रसाद अग्रवाल, प्रकाशन : लखनऊ विश्वविद्यालय।
 10. सेतुबन्ध (हिन्दी अनुवाद) – डॉ. रघुवंश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
 11. प्राकृत-गद्य-पद्य-बंध (भाग – 3) – प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली।
 12. प्राकृत भाषा और साहित्य – डॉ. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली।
- अनुशासित डिजिटल प्लेटफार्म – वेब लिंक, ई-सोर्सस, ई-पुस्तकालय, जैन ई लायब्रेरी, विकीपीडिया, ज्ञानगंगा।

भाग द – अनुशासित मूल्यांकन विधियाँ :

अनुशासित सतत मूल्यांकन विधियाँ : लिखित परीक्षा, सतत आंतरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्व्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न निर्माण।

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30 विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 70

आंतरिक मूल्यांकन : सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) :	क्लास टेस्ट असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन)	कुल अंक : 30
आकलन : विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु उत्तरीय प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	कुल अंक : 70

कोई टिप्पणी / सुझाव :

Nbdw

आशीष जैन

6

7